हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(बसंत)(पाठ 11)(रहीम के दोहे)
(कक्षा 7)

प्रश्न अभ्यास

दोहे से

प्रश्न 1:

पाठ में दिए गए दोहों की कोई पंक्ति कथन है और कोई कथन को प्रमाणित करने वाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग–अलग लिखिए।

उत्तर 1:

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह।।

प्रश्न 2:

रहीम ने क्वार के मास में गरजने वाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं ? दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजने वाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर 2:

क्वार के मास में आसमान में घिरने बादल ऐसे लगते है। कि जैसे बरस पड़ेंगे पर बिना बरसे ही गरज कर चले जाते हैं । ठीक वैसे ही वे व्यक्ति हैं जो पहले अमीर थे पर अब गरीब हो चुके हैं पर उनके अंदर से अभी वह अकड़ नहीं गई है और वे अपने वही पुराने दिनों की डींगें मारते रहते हैं । इसके विपरीत सावन में बरसने वाले बादल उन लोगों की तरह हैं जो डींगें नहीं मारते अपने काम से लोगों को प्रभावित करते हैं।

दोहों से आगे

नीचे दिए गए दोहों में बताई गई सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो उनके क्या लाभ होंगे? सोचिए और लिखिए।

क:

तरुवर फल.....सचहिं सुजान।।

क:

यदि हम इस दोहे के सार को अपने जीवन में उतार लें तो सारे झगड़े ही समाप्त हो जाएं । कोई किसी से बैर न करे सभी दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करें । जैसे दोहे के अनुसार नदी और पेड़ के स्वभाव के बारे में बताया गया है , दानों ही दूसरों के लिए कार्य करते हैं ।

ख:

धरती की–सी.....यह देह।।

ख:

जैसे धरती हर मौसम को हॅसते–हॅसते सह लेती है और पेड–पौधों तथा लहलहाती फसल के रूप में हॅसती सी दिखाई देती है ठीक वैसे ही यह शरीर भी है जो हर मौसम के अनुसार ढल जाता है ।